सरला ठकराल की प्रेरक कहानी - सिर्फ 21 साल की उम्र में उड़ाया विमान

मुश्किलें आएँगी।
लोग रोकेंगे।
परिस्थितियाँ बदलेंगी।

जो उड़ने का साहस करता है, आसमान उसी का हो जाता है।

साल था 1936।

भारत अभी आज़ाद नहीं हुआ था। उस समय महिलाओं के लिए अपने सपनों को पूरा करना आज की तरह आसान नहीं था।

लेकिन एक 21 साल की युवती ने ऐसा सपना देखा, जिसे उस समय बहुत कम महिलाएँ देखने का साहस करती थीं।

उसका नाम था—सरला ठकराल।

सरला का जन्म 8 अगस्त 1914 को दिल्ली में हुआ था। विवाह के बाद उनके पति पी. डी. शर्मा स्वयं पायलट थे। उन्होंने सरला के भीतर छिपे सपने को पहचाना और उन्हें विमान उड़ाने के लिए प्रोत्साहित किया।

सरला ने उड़ान की ट्रेनिंग शुरू की।

लोगों के लिए विमान उड़ाना शायद एक असाधारण काम था, लेकिन सरला के लिए यह अपने सपनों को पंख देने का रास्ता था।

और फिर आया वह ऐतिहासिक दिन...

1936 में, केवल 21 वर्ष की उम्र में, सरला ने 'जिप्सी मॉथ' विमान से अकेली उड़ान भरी।

सोचिए—एक युवा भारतीय महिला, उस दौर में जब विमानन का क्षेत्र लगभग पूरी तरह पुरुषों का माना जाता था, आसमान में अकेली उड़ रही थी।

उन्होंने आगे बढ़कर 1,000 घंटे से अधिक उड़ान का अनुभव प्राप्त किया और 'A' पायलट लाइसेंस हासिल किया।

लेकिन जिंदगी हमेशा एक जैसी नहीं रहती।

1939 में उनके पति की विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई। सरला ने फिर भी हार नहीं मानी। उन्होंने व्यावसायिक पायलट बनने की कोशिश की, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के कारण नागरिक उड़ान प्रशिक्षण रुक गया।

इसके बाद उन्होंने कला सीखी और आगे चलकर चित्रकार, डिजाइनर और सफल व्यवसायी के रूप में भी अपनी पहचान बनाई।

सरला ठकराल की कहानी हमें बताती है—

सपनों की उड़ान के लिए आसमान से ज्यादा जरूरी होता है साहस।

मुश्किलें आएँगी।

लोग रोकेंगे।

परिस्थितियाँ बदलेंगी।

लेकिन अगर आपके भीतर अपने सपने को पूरा करने का साहस है, तो रास्ता जरूर निकलेगा।

याद रखिए—

"आसमान कभी किसी एक के लिए नहीं होता।

जो उड़ने का साहस करता है, आसमान उसी का हो जाता है।"

सरला ठकराल ने केवल एक विमान नहीं उड़ाया था...

उन्होंने हजारों भारतीय बेटियों के सपनों को उड़ान दी थी।